BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

हिन्दी कहानियों में किसानी जीवन : प्रेमचंद से चंद्रकिशोर जायसवाल तक

शिल्पी कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

शोध सार- साहित्य में मानव जीवन और उनकी परिस्थितियों को अनेक संवेदनात्मक विधाओं (कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, आत्मकथा, जीवनी आदि) के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है | कहानी उन्हीं संवेदनात्मक विधाओं में से एक है, जिसमें समयानुसार अनेक बदलाव हुए । समयानुसार मानव जीवन में आए विभिन्न बदलावों को प्रेमचंद और चंद्रकिशोर जायसवाल ने कहानियों में यथावत रूप से चित्रित किया है। गंवई माटी से सरोकार रखने वाले उक्त दोनों लेखक कहानियों में ग्रामीण स्त्री, वृद्ध, किसान-मजदूर आदि की समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं | किसान वर्ग ग्रामीण समाज के मेरुदंड होते हैं | जहाँ एक ओर प्रेमचंद की कहानियों में औपनिवेशकालीन भारतीय किसान का चित्रण मिलता है तो वहीं दूसरी ओर चंद्रकिशोर जायसवाल की कहानियों में आपातकाल से प्रभावित एवं भूमंडलीकृत गाँवों के किसानों का चित्रण मिलता है | दोनों की कहानियों में समरसता का भाव दिखता है, जो उनके सहज व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है | प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ', 'पूस की रात' मुक्तिमार्ग' हो या फिर चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानी 'जय किकिकिकिकिसान', 'जमीन', 'समाधान' हो, इन सबमें किसान के विविध पक्षों को उजागर किया गया है।

बीज शब्द- कहानी, किसान, कृषि, ग्रामीण जनजीवन, उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण, पलायन

मूल आलेख- किसी भी देश का साहित्य, वहाँ के समाज का प्रतिबिम्ब होता है | हिन्दी साहित्य के शिरोमणि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन समीचीन प्रतीत होता है- "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है |"1 परिवर्तन स्वरूप साहित्य का अभिप्राय होना चाहिए कि समाज के शिक्षित वर्ग के साथ-साथ अशिक्षित वर्ग भी उससे लाभान्वित हो सकें । कहानी में व्यक्ति मन की संवेदनाएं मुखर रूप से प्रतीत होती है | कहानी प्राचीन समय से लेकर अर्वाचीन समय तक कालजयी प्रतीत होती आयी है | ब्रिटिश आलोचक टी. एम. फोस्टर का कहना है कि "कहानी मनुष्य की आदिम अवस्था से सम्बद्ध है । यह तब उत्पन्न हुई थी जब मनुष्य पढ़ना भी नहीं सीखा था, साहित्य के मूल रूप उत्पन्न हो रहे थे । इसलिए कहानी हमारी आदिम प्रवृत्तियों को अपील करती है |"2 मौखिक रूप में कहानी, आदिम काल से मौजूद थी, किंतु लिखित परंपरा भारत में वैदिक काल से मिलती है ।

मानव सभ्यता के विकास में कृषि अहम भूमिका निभाती है | प्राचीन समय में मानव का अस्तित्व कृषि और शिकार पर आश्रित था और भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी | "वैदिक काल में कृषि के महत्व का प्रमाण वैदिक वांग्मय और परवर्ती संस्कृत-साहित्य श्रौत सूत्र आदि में विशेष रूप से मिलता है । ऋग्वेद के दशम् मंडल में 'कृषिमत कृषस्व' अर्थात्ः खेती ही करो कहा है । यजुर्वेद में धान, जौ, उड़द, मूंग, तिल, सांवा, कोदो, मसूर आदि खाद्यानों अनेक प्रकार की वनस्पतियों तथा हल, जुआ, फाल, जोती, बैल आदि साधनों एवं सीरा, सीता, वप्र, केदार आदि भूखंडों के नाम आए हैं |"3

भारतीय इतिहास में नवपाषाणकाल हो या फिर मध्यकाल, सभी में कृषि ही अर्थव्यवस्था की नींव थी | "नवपाषाण काल को मनुष्य द्वारा कृषि कार्य प्रारंभ किए जाने के कारण 'मानव जीवन के प्रथम क्रांति का काल'

@2025 Bihar Shodh Samaagam

कहते हैं । कृषि प्रारंभ होने के कारण मानव गुफाओं से निकलकर मैदानी क्षेत्रों में निवास करने लगा |"4 मौर्यकाल में भी अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत कृषि ही था । साथ ही यहाँ के अर्थव्यवस्था में पशुपालन और वाणिज्य-व्यापार का भी सहयोग था । तत्पश्चात औपनिवेशिक भारत में शासक अपने फायदे के लिये उद्योग, यातायात, सूचना-क्रांति आदि में विकास तो किया किंतु भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने वाली कृषि के विकास में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई । कारणवश औपनिवेशिक भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का सहयोग नगण्य रहा । "सन् 1901 और 1941 के बीच प्रति व्यक्ति कृषि उत्पादन में 14% तक की गिरावट आ गई |"5

कथा सम्राट प्रेमचंद की कहानियों में इसी औपनिवेशकालीन भारतीय किसान का चित्रण हुआ है | उनकी संपूर्ण कला चेतना भारतीय किसान की जीवन पद्धति से प्रभावित हुई है | गद्य-साहित्य में प्रेमचंद से पहले, किसानों का ऐसा हिमायती साहित्यकार सामने नहीं आया अपितु पद्य साहित्य में तुलसीदास से लेकर बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (जीर्ण-जनप), गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (कृषक क्रंदन, दुखिया किसान) और मैथिलीशरण गुप्त (किसान) सामने आये हैं |

सर्वप्रथम कथा-साहित्य में किसानी जीवन के आख्याता प्रेमचंद हिन्दी व उर्दू के लेखक थे | इनका साहित्यिक जीवन सन् 1901 से शुरू हुए थी | तत्कालीन भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन से आजादी का आह्वान कर रहा था । जहाँ एक ओर राजनीति में महात्मा गाँधी, अपने सरल एवं सहज व्यवहार से भारतीय समाज को जागृत कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर साहित्य में प्रेमचंद अपनी लेखनी से हुंकार भर रहे थे | समाज की जागृति हेतु प्रेमचंद के विचारों पर गाँधी का प्रभाव अत्यधिक रुप से दिख रहा था । सन् 1915 में गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने बिहार के चंपारण जिले में किसानों की कठिनाइयों की जांच के लिए कमीशन बैठाने का प्रस्ताव दिया | तत्पश्चात सन् 1917 में चंपारण में ज़मींदारों के खिलाफ़ किसानों के आंदोलन को संगठित किया क्योंकि किसानों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना था । इसी बरक्स प्रेमचंद किसानों की समस्याओं एवं उनपर हो रहे उत्पीडन की साहित्यिक अभिव्यक्ति देने का प्रयास कर रहे थे । इन्होने वृहत्रयी उपन्यास 'प्रेमाश्रम', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' एवं कहानियाँ 'सवा सेर गेहूं', 'पूस की रात', 'बलिदान', मुक्तिधन', 'मुक्तिमार्ग' इत्यादि में किसानी जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे- जीवनचर्या, संघर्ष, समस्या एवं उसके निदान का जीवंत एवं बेवाक चित्र प्रस्तुत करते हैं ।

प्रेमचंद, कथा साहित्य के कथावस्तु को ऐय्यारी, जासूसी, पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं से इतर लोकमन, आम जनजीवन एवं हाशियाकृत मानवों की व्यथा की ओर ले गए | उनके युग-प्रवर्तक अवदान को इंगित करते हुए डॉ. नगेंद्र लिखते हैं- "प्रथमत: उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से उठाकर जीवन के साथ सार्थक रूप से जोड़ने का काम किया |"6 जीवन के इसी सार्थकता को प्रेमचंद, तत्कालीन समाज में मौजूद जमींदारों के द्वारा उत्पन्न किए गए किसानों की समस्या, सूदखोरों से शोषित, भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का चित्रण करते हैं। इनकी कहानियों में औपनिवेशिक सत्ता से मुक्ति हेतु जनता का संघर्ष ही नहीं, बल्कि सामंतवादी-पूँजीवादी तंत्र के शोषण-उत्पीड़न से त्रस्त किसानों की व्यथा भी है । धर्म की आड़ में अर्थसिद्धि साधक कहानी 'सवा सेर गेहूँ का विप्र महाराज है, जिसके शोषण से ऋणग्रस्त शंकर, किसान से मजदूर और फिर मजदूर से दास बनने पर मजबूर हो जाता है । शंकर, विप्र महाराज से सवा सेर गेहूँ उधार लेता है और बदले में डेढ़ पसेरी के लगभग गेहूँ देता है और स्वयं को उऋण समझता है | किन्तु सात वर्ष बाद सवा सेर गेहूँ ब्याज सहित साढ़े पाँच मन हो गया है, ऐसा विप्र महाराज के द्वारा कहे जाने पर शंकर के तो मानो पैरों तले जमीन ही खिसक जाती है और चकित होकर कहता है- "मैंने तुमसे कब गेहूँ लिए थे जो साढ़े पाँच मन हो गए ? तुम भूलते हो, मेरे यहाँ किसी का छटांक-भर न अनाज है, न एक पैसा उधार |"7 बशर्ते इसके सवा सेर गेहूँ के बदौलत शंकर एवं उसके पुत्र को जीवन पर्यंत गुलामी करनी

पड़ती है | कहानी में धार्मिक अंधविश्वास का हवाला भी दिया गया है, जहाँ अनपढ़ किसानों का महाजन, धर्म की आड़ में शोषण करता है । अंग्रेजों के अधीन भारत में देशी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था जो किसानों के मानवाधिकारों का हनन करती हुई प्रतीत हुई है ।

प्रेमचंद की एक अन्य कहानी 'पूस की रात' में औपनिवेशिक सरकार और सामंतों-जमींदारों के गठजोड़ से उपजी तीसरी ताकत अर्थात् महाजनों का वर्चस्व है, जिसने ग्रामीणों को बुनियादी जरूरतों से वंचित रखा है | कहानी में पशु-पक्षियों एवं कीट-पतंगों के उत्पाद को भी सप्रसंग व्याख्यायित किया गया है | यह कहानी एक रात की कहानी न होकर सदियों से चली आ रही अनंत रात्रि की कहानी है, जो आगामी सदियों तक चलती रहेंगी । पूस की उस कपकपाती रात में तैयार फसल की रखवाली के लिए जबरा, मालिक हल्कू संग खेत पर रहता है । हड्डी को चीरती हुई पछिया हवा में हल्कू शरीर की गर्माहट के लिए अलाव का सहारा लेता है और जबरा भी गर्माहट हेतु हल्कू से चिपट जाता है । तैयार फसल को नीलगायों द्वारा चरे जाने पर जबरा सजग हो उठता है किंतु हल्कू से उठा नहीं गया । "जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगाए खेत का सफाया किए डालती थी और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था । अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ से जकड़ लिया |"8 हल्कू का यह शिथिल व्यवहार, अंतर्मन के सवालों में उलझा हुआ है कि पहले जमींदार और फिर नीलगाय, क्या ये सभी मेरा अहित ही करना चाहते ? किसानी जीवन की महागाथा व्यक्त करती हुई कहानी का एक प्रसंग, जहाँ क्षण भर के लिए सूखी पत्तियाँ जलती है और फिर बगीचे में अंधकार छा जाता है । किसानों के जीवन में खुशियाँ भी क्षणभंगुर होती है अर्थात 'चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात |' किसान चाहे जितना भी परिश्रमी क्यों ना हो उसकी सार्थकता नगण्य ही रहती है । किसान गरीबी, बदहाली और फटेहाली में बंट मजदूर बनने पर विवश हो जाते है और उस बेबशी में सुकून को तलाशने लगता है- "मुन्नी ने चिंतित होकर कहा- अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी । हल्कू ने प्रसन्न-मुख से कहा-रात की ठंड में यहाँ सोना तो ना पड़ेगा |"9

प्रेमचंद की कहानियों में औपनिवेशकालीन भारतीय किसानों की व्यथा के साथ-साथ सांप्रदायिक सौजन्य भी दिखाई देती है | हिन्दू और मुस्लिम के मध्य आपसी भाईचारे को प्रकट करती कहानी 'मुक्तिधन' है | रहमान गाय को कसाई के हाथों नहीं अपितु हिन्दू महाजन दाऊदयाल के हाथों बेचता है | रहमान धन से निर्धन अवश्य है किंतु मन से धनी है | "रहमान... दाऊदयाल से बोला- हजूर, आप हिन्दू हैं इसे लेकर आप पालेंगे इसकी सेवा करेंगे । ये सब कसाई हैं, इनके हाथ मैं 50 रुपए को भी कभी ना बेचता |"10 मुसलमान रहमान हिन्दू धर्म की मर्यादा का आदर करता है | वह जमींदार का लगान चुकाने हेतु ही गाय बेचता है अन्यथा उसे गाय से अत्यंत स्नेह रहता है | उसके इसी दरियादिली को देखकर दाऊदयाल चकित है- "भगवान ! इस श्रेणी के मनुष्य में भी इतना सौजन्य, इतनी सहृदयता है ! यहाँ तो बड़े-बड़े तिलक त्रिपुंडधारी महात्मा कसाइयों के हाथ गउएं बेच जाते हैं; एक पैसे का घाटा भी नहीं उठाना चाहते । और यह गरीब 5 रुपए का घाटा सहकर इसलिए मेरे हाथ गऊ बेच रहा है कि यह किसी कसाई के हाथ न पड़ जाए | गरीबो में भी इतनी समझ हो सकती है |"11 रहमान अपने परिवार के हज-यात्रा हेतु ऋणग्रस्त हो जाता है और फसल बेचकर ऋण मुक्त होना चाहता है | किंतु खेत में आग लगने से सारी फसल राख हो जाती है । दाऊदयाल के पैसो को न चुका पाने की लज्जा मे रहमान, पुनः पैसे ब्याज पर लेने से कतराता है । किंतु रहमान के सांप्रदायिक सद्भावना और दरियादिली के कारण दाऊदयाल उसे ऋणमुक्त कर देता है ।

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के पहले ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में किसानों के विविध परिस्थितियों एवं समस्याओं को केंद्र में रखा है । ऋणग्रस्त किसानी आत्महत्या का सटीक उदाहरण 'बलिदान' कहानी है | चिन्तायुक्त गिरधारी ऋण से उऋण ना हो पाने की टीस में परिवार को बेसहारा छोड़ कुएं में कूद जाता है । भारत

एक कृषि प्रधान देश होने के बावजूद भी यहाँ कृषकों की आत्महत्या का सिलसिला निरंतर बढ़ता ही जा रहा है । सन् 2013 में प्रकाशित आंकड़े बताते हैं कि- "आज लगभग हर रोज़ 37 किसान आत्महत्या कर रहे हैं, महीने में यह आंकड़ा लगभग 950 है | आज किसानों की आत्महत्या का मुख्य कारण मानसून की अनिश्चितता, सूखा, बाढ, महंगाई एवं ऋण का अत्यधिक बोझ है | महाजनों बिचौलियों आदि के चक्र में फँस कर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्याएं की हैं |"12 प्रेमचंद की कहानियाँ वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है |

ऋण से उऋण हेतु किसान, मजदूर बनने की राह चुनते हैं | प्रेमचंद की एक अन्य कहानी 'मुक्तिमार्ग' है | जहाँ गरीब किसानों की आपसी रंजिशे भी मनुष्य की बुनियादी जरूरतों (रोटी, कपड़ा और मकान) से वंचित रखती है | किसान झींगुर के पास तीन बीघे की ईंख की फसल थी | बुद्धू के भेड़ द्वारा फसल के नुकसान पर झींगुर के द्वारा भेड़ की पिटाई पर बुद्धू आग बबूला हो जाता है | "केले को काटना भी इतना आसान नहीं जितना किसान से बदला लेना ! उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है, या खलिहानों में । कितनी ही दैविक और भौतिक आपदाओं के बाद कहीं अनाज घर में आता है और जो कहीं इन आपदाओं के साथ विद्रोह ने भी संधि कर ली तो बेचारा किसान कहीं का नहीं रहता |"13 इन वाक्यों की सत्यता तब प्रकट होती है, जब बुद्धू, झींगुर के लहलहाते फसल को जलाकर राख कर देता है । बदले में झींगुर भी बुद्धू के खुशहाल जीवन को हानि पहुंचाता है | इस कदर जीवन की बदहाली में दोनों मजदूरी करने लगते हैं | चूल्हे की आग से ज्यादा दहक बदले की आग में होती है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह कहानी है । प्रेमचंद के किसानी व्यवस्था में ज़मींदार, किसान और मजदूर की भूमिका सचरित्र दिखाई पड़ती है | षैजू द्वारा लिखित आलेख 'प्रेमचंद : किसान चिंता, संस्कृति और विचारधारा' में उल्लेखित है- "आचार्य शुक्ल ने गाँव में रहने वालों को 'भूमि से संबंध रखने वाले' वर्गों के रूप में पेश किया है तथा बताया कि 'किसान' के अलावा 'जमींदार' और 'मजदूर' भी गाँवों के निवासी हैं | प्रेमचंद के साहित्य में ये तीनों वर्ग मौजूद हैं, परन्तु उनका लक्ष्य है किसान । यही किसान भारत को कृषि प्रधान देश बनाता है | भारत को कृषि-प्रधान देश बनाने में जमींदारों की भूमिका सकारात्मक नहीं मानी जा सकती । वे जमीन के बड़े हिस्से के मालिक थे, परंतु खेती का काम स्वंय नहीं करते थे | हल चलाना, बीज बोना, फसल काटना आदि जितने भी कृषि-कार्य हैं, उन्हें सम्पन्न कराने के लिए ज़मींदार वर्ग मजदूर रखते थे |"14

फलत: प्रेमचंद ने ही सर्वप्रथम कहानियों के केंद्र में किसानों को रखा | इनके बाद कहानियों में किसान-मजदूर की उपस्थिति दर्ज होने लगी | क्रमश: कहानियाँ इस प्रकार है- 'अभागा किसान' (पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'), 'सफरनामा' और 'पिशाच' (संजीव), 'किकिकिकिकिसान' (चंद्रकिशोर जायसवाल), 'मखान पोखर' (रामधारी सिंह दिवाकर), 'बाजार में रामधन' (कैलाश बनवासी) इत्यादि । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात किसानों की स्थिति में भी बदलाव आ रहे हैं । विभिन्न कहानीकारों ने इसी बदलावों को कहानी का कथावस्तु बनाया | कहानीकारों के इसी क्रम में अस्सी के दशक में रचनारत चंद्रकिशोर जायसवाल ने किसानों की संवेदनाओ को सजीवता के साथ चित्रित किया है |

चूँकि चन्द्रकिशोर जायसवाल स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आपातकालीन समाज में साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश कर वर्तमान समय में भी रचनारत हैं, इसलिए उनकी कहानियों के किसानी पात्र तत्कालीन घटनाओं से प्रभावित प्रतीत होते हैं । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात साल 1960 का दशक आर्थिक संकट का रहा है | तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-1966) कृषि और गेहूँ उत्पादन बढ़ाने पर केंद्रित थी । किंतु सन् 1962 का भारत-चीन युद्ध और सन् 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध ने आर्थिक समस्याओं को उजागर किया और रक्षा उद्योग पर ध्यान केंद्रित किया । साथ ही सन् 1965 और सन् 1966 में मानसून का लगातार खराब होने से सूखा पड़ने लगा, जिससे मुद्रास्फीति बढ़ने लगी । सरकारी कानून के शिथिल पड़ने एवं जमींदारों द्वारा छोटे किसानों पर किए जा रहे उत्पीड़न पर अंकुश लगाने हेतु

चारु मजमूदार, कानू सान्याल और आदिवासी नेता जंगल संथाल के साथ मिलकर एक किसान सम्मेलन आयोजित किया । "सम्मेलन में जमीन पर भूस्वामियों के अधिकार की समाप्ति, किसान समितियों के जरिए भूमि-वितरण तथा केन्द्रीय सरकार, संयुक्त मोर्चा सरकार और भूस्वामियों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का आह्वान किया |... अप्रैल और मई 1967 के बीच सारे गाँव संगठित किए जा चूके थे |"15 नक्सलबाड़ी आंदोलन, स्वाधीन भारत का महत्वपूर्ण किसान आंदोलन था, जिसमें किसान और भूमिहीन खेतिहर मज़दूरों ने मिलकर जमीनों पर कब्जा कर लिया, भूमि संबंधी रिकॉर्ड जला दिए, कर्जे माफ़ कर दिए गए और घृणित भूस्वामियों को मृत्युदंड दिए । हालांकि नक्सलबाड़ी आंदोलन आगे चलकर घृणित हिंसा का रूप ले लिया, किंतु शुरुआती दौर में बेसहारा किसान-मज़दूरों के लिए सहायक सिद्ध हुआ था | इस तरह किसानों द्वारा उनके अधिकारों की लड़ाई शुरू तो हुई, किंतु सन् 1990 में आई 'नई आर्थिक नीति' ने उसी अधिकारों पर अंकुश लगा दिया ।

कृषि, भारतीय संस्कृति की पहचान है, जो हमारे आर्थिक और सामाजिक उन्नति का माध्यम रही है, किंतु सन् 1990 के बाद यह स्थान बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने ले लिया | भूमंडलीकरण के आते ही किसान एवं कृषि का ढांचा ही बदल गया । अक्सर किसानों को बीज, उर्वरक, जुताई और बिक्री के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है | बाजारवाद से किसानी जीवन प्रभावित होने लगा | सन् 1991 में 'नई आर्थिक नीति' आने के पश्चात डब्ल्यू.टी.ओ. ने सन् 1995 में कृषि क्षेत्र में नियम बनाने के लिए दबाव डाला, जिससे उत्पादों के दामों में वृद्धि और खेती की साख में गिरावट ने किसानों के ऊपर कर्ज का बोझ बढ़ाया । "किसानों ने बेहतर फसल और उससे अभूतपूर्व धन कमाने के लोभ में कर्ज लिया। फसल सूख गई, कीड़े लग गए या उत्पादित फसल की माँग कम हुई तो किसान ऋण के बोझ से दब गए ।... इतना बड़ा आर्थिक आघात कि इस किसान को आकाश से धरती पर नहीं, पाताल में धकेल देता है । फिर सपरिवार आत्महत्या के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचता | ऋण-ग्रस्त व्यापारी भी आत्महत्या करते हैं |"16

इसी आत्महत्या जैसी अमानवीय घटना पर आधारित चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानी 'समाधान' है | वर्ष 2024 का 'श्रीलाल शुक्ल इफको स्मृति सम्मान' से सम्मानित चंद्रकिशोर जायसवाल गंवई माटी के कथाकार हैं । इनकी अधिकांश कहानियों की कथावस्तु गंवई परिवेश में सांस लेती है | गाँवों के मेरुदंड, किसानों की समस्या इनकी कहानियों से झांक रहे हैं | वैसे तो किसानों के जीवन में कर्ज का सिलसिला वर्षों से शुरू है, लेकिन भूमंडलीकरण के समय यह अत्यंत गतिशील हो गई | 'समाधान' कहानी में इसी सिलसिले का जिक्र हुआ है- "किसानों पर कब कर्ज का बोझ नहीं रहा है ? अभी जो किसान हैं, उनके बाप, दादा या परदादा क्या किसान नहीं थे ? उन पर क्या क़र्ज़ का बोझ नहीं था ? तब तो वे औरों की तरह मरे; अब उनके बेटे-पोते कर्ज के बोझ से क्यों मरने लगे ?"17 भूमंडलीकृत किसानों की स्थिति पर कथा-आलोचक मैनेजर पांडेय के शब्द- "पहले भारत में भूमंडलीकरण का जश्न मनाया जा रहा है और दूसरे भारत के किसान भुखमरी के शिकार हो रहे हैं आत्महत्या कर रहे हैं । पहले भारत में उपभोक्तावाद का राज़ है और दूसरे भारत में असमानता, आर्थिक विपन्नता तथा दमन का । भारत के गाँवों में अब भी दलितों, स्त्रियों और दस्तकारों की गुलामी बड़े पैमाने पर मौजूद है । पहला भारत विश्व-ग्राम का हिस्सा हो गया है और दूसरा भारत पहले का चारागाह बना हुआ है । भारत के असली गाँव तबाही के कगार पर हैं और नकली विश्व-ग्राम के गीत गाए जा रहे हैं । पहले भारत में दृश्यों की दुनिया का मायालोक फैला हुआ है और दूसरे भारत का दैनिक जीवन उपनिवेशीकरण के शिकंजे में है | भूमंडलीकरण के कारण भारत की कृषि-व्यवस्था और किसान गहरे संकट में है |"18

आधुनिकीकरण की आँधी में भी किसान अपनी एकमात्र संपत्ति जमीन और खेत-पतवार को धूमिल होने से बचाना चाहते हैं | स्वयं की परवाह किये बगैर वे अपने वंशजों के बारे में सोचते हैं | 'जमीन' कहानी में निर्धनता से त्रस्त किसान हरिलाल बीमार होकर जीवित रहने से मर जाना बेहतर समझता है | समवेत रूप से गरीबों की व्यथा चित्रित होती है- "गाँव के गरीबों को अगर भगवान रोग दे, तो खूब हल्का या खूब भारी । रोग इतना हल्का हो कि गाँव का झोला डॉक्टर भी दवा की दो-चार खुराक से उसे भगा दे, या फिर इतना भारी कि इलाज कराने की बात ही घरवालों के ध्यान में नहीं आए । इन दोनों के बीच का वह रोग अच्छा नहीं जो इलाज में खेत-पतार छीन ले, डीह-बाड़ी बिकवा दे |"19 और अंततः वह सदैव के लिए घर-परिवार को त्याग देता है |

वहीं एक अन्य कहानी 'जय किकिकिकिकिसान' है, जिसमें मृत्युशैया पर पड़े रमाधीन मण्डल पैतृक धरोहर को सहेजने की कोशिश में लगे होते हैं | कहानी में किसानों की बुनियादी जरूरतें (रोटी, कपडा और मकान) तो पूरी नहीं हो पाती है, किन्तु ऋणग्रस्त होकर गाँव-समाज का पेट भर सकने जैसी रूढ़िगत परम्पराओं (श्राद्ध-भोज) पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है | समाज की इसी सच्चाई से रूबरू रमाधीन मंडल अपने दोनों बेटों को ताकीद करते हैं- "मेरे मरने पर कोई श्राद्ध-भोज नहीं देना | मैं जानता हूँ, समाज के लोग तुम्हें घेरेंगे, बाप की आत्मा की शांति के लिए भोज देने का दबाव तुम पर डालेंगे... तब तुम उन्हें साफ-साफ सुना देना कि रमाधीन मंडल यह कह कर मरा है कि अगर मरनी का भोज होता है, तो उसकी आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी |"20 अनुभवी रमाधीन को ज्ञात है कि गाँव में जमीन टके के भाव में बिकती है, किन्तु खरीदारी आसमानी भाव से होता है । यह वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है | फसलों की रोपाई हो या बेटी का ब्याह, बीमारी का इलाज हो या फिर मृतकों का श्राद्ध-भोज, सभी में ऋणग्रस्त किसान के सामने जमीन बेचने की नौबत आ ही जाती है | इस प्रकार किसान से मजदूर और मजदूर से दास बनकर जीवन पर्यंत समय काटना पड़ता है |

कर्ज के मकड़जाल में फंसे किसानों की व्यथा का दयनीय चित्रण 'अनगढ़' कहानी में प्रस्तुत हुआ है | जहाँ कर्ज के बोझ से लदे किसान बूंदीलाल के बेटे बटेसर ने आत्महत्या कर ली । यह प्रसंग गाँव वालों के लिए दिल दहला देने वाली वारदात है | इस परिस्थिति में भी गाँव वालों की सोच पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी- "कर्ज के बोझ से उसका बाप मरता, वह क्यों मरा ? कोई भी क्यों मरता ? गांव के किस किसान पर कर्ज का बोझ नहीं हैं ? कोई तो मरने नहीं गया । दबते, पिसते और बेइज्जत होते हुए भी सब जिए चले जा रहे हैं |"21 संपूर्ण मानव जन को भोजन करवाने वाले किसानों की यह दुर्दशा अत्यंत विचारणीय है । फलत: किसानों का यह मोहभंग नगरों और महानगरों जैसे दिल्ली एवं पंजाब में मजदूरी करने पर मजबूर करती है । शहरों की ओर पलायन का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार किसानी जीवन की बर्बरपूर्ण हत्या हो रही है ।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि हिन्दी कहानी के पुरोधा प्रेमचंद और चंद्रकिशोर जायसवाल की कहानियों में किसानी जीवन का हृदयग्राही चित्रण है । वैसे तो दोनों के रचना काल में पांच दशक का अंतराल है, किंतु विषयवस्तु कमोबेश समान ही प्रतीत होती है | प्रेमचंद उपनिवेशीकृत समाज में कहानीकार थे और चंद्रकिशोर जायसवाल भूमंडलीकृत समाज के कहानीकार हैं | भूमंडलीकरण को प्रेमचंद युगीन उपनिवेशवाद का पर्याय मानना कहीं से अनुचित नहीं लगता है | दोनों की रचनाएं केवल मनोरंजन हेतु नहीं आंकी जा सकती, बल्कि ग्रामीण किसानों की कटुतर सच्चाइयों को सजीवता के साथ चित्रित करती है | इनकी कहानियों में मौजूद किसानी जीवन बिहार और उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी जीविका कृषि और पशुपालन पर आधारित है | यहाँ का अधिकांश किसान बुनियादी सुविधाओं से वंचित होकर ऋणमुक्ति हेतु मजदूरी करने दिल्ली और पंजाब जैसे

विकसित राज्यों की ओर पलायन करते हैं | वैसे तो दोनों लेखक समीक्षकों और आलोचकों के द्वारा उपेक्षित रहें किन्तु पाठक वर्ग में सहृदयता के साथ अपेक्षित रहें | इनकी रचनाएं वर्तमान समाज और साहित्य के लिए मार्गदर्शक साबित होती है ।

सन्दर्भ सूची-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति-2018, पृष्ठ-13
2. डॉ. हरदयाल, हिन्दी कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, प्रथम सं.-2017, पृष्ठ-18
3. डॉ. चंद्रिका ठाकुर, बिहार की कृषि और सामाजिक व्यवस्था, बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, प्रथम-संस्करण, पृष्ठ-1
4. मनीष रंजन, बिहार, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, प्रथम संस्करण-2000, पृष्ठ-4
5. बिपिन चन्द्र, आजादी के बाद का भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पुनर्मुद्रण-2017, पृष्ठ-12
6. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी सं-1973, पृष्ठ-60
7. भीष्म साहनी (संपादक), प्रेमचन्द्र प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स, अठारहवां सं- 2023, पृष्ठ-66
8. वही, पृष्ठ-54
9. वही, पृष्ठ-55
10. हिन्दी समय, अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सौजन्य से, गद्यांश-1
11. हिन्दी समय, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सौजन्य से, गद्यांश-1
12. Shiva Vandana, Why are Indian Farmers Committing, Suicide and how can we stop this tragedy? Voltaire Network, मूल से 26 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित
13. प्रेमचन्द, मुक्तिमार्ग एक लघु कथा, ओरिएंट पब्लिसिंग, नई दिल्ली, पृष्ठ-6
14. गुप्ता ठाकुर और नीरज खरे (संपादक), प्रेमचन्द और हमारा समय, मुंशी प्रेमचंद शोध एवं अध्ययन केंद्र, लमही, प्रथम सं-2021, पृष्ठ-190
15. बिपिन चन्द्र, आजादी के बाद का भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पुनर्मुद्रण : 2017, पृष्ठ-602
16. विश्वनाथ त्रिपाठी, आलेख-होरी के बाद गाँव, सहारा समय, समग्र-प्रेमचंद : 125 वर्ष : 30 जुलाई 2005, पृष्ठ-22
17. चंद्रकिशोर जायसवाल, खट्टे नहीं अंगूर, रचनाकार प्रकाशन पुर्णिया, पृष्ठ-70
18. आभा गुप्ता ठाकुर और नीरज खरे (संपादक), प्रेमचंद्र और हमारा समय, मुंशी प्रेमचंद शोध एवं अध्ययन केंद्र लमही, प्रथम सं- 2021, पृष्ठ-107
19. चंद्रकिशोर जायसवाल, जमीन, अर्चना पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण-2009, पृष्ठ-9
20. चंद्रकिशोर जायसवाल, हम आजाद हो गए, रचनाकार प्रकाशन, पुर्णिया, पृष्ठ-147
21. चंद्रकिशोर जायसवाल, जमीन, अर्चना पब्लिकेशन, प्रथम सं-2009, पृष्ठ-180